मेरी कहानी हम सबकी कहानी

मेरा नाम कौशल्या है। मेरी उम्र लगभग 35-36 साल है। मेरे दो बेटियां और एक बेटा है। शादी को 17-18 साल बीत गए हैं। बड़ी लड़की 15 साल की है। मेरा पति बहुत शराब पीता है। सास-ससुर के मरने के बाद सारी ज़मीन-जायदाद बेचकर शराब में उड़ा दी। मेरे गहने और घर का तमाम सामान उसकी एय्याशी पर बलि चढ़ गया। मैं थोड़ा बहुत कमाकर पेट पालती हूं। वह थोड़ा बहुत कमाता है तो उसकी चंडाल-चौकड़ी उसका पीछा नहीं छोड़ती। कई-कई दिन तक जुआ खेलता रहता है, घर नहीं आता।

एक दिन हाथ में जब दारू की बोतल लिए झूमता घर में घुसा तो मैंने कहा कि "लड़की 15 साल की हो गई है, उसकी शादी की तुझे कोई चिंता नहीं है।" जुआ मंडली में उसने यह बात छेड़ी। दोस्त तो खुशी से खिल पड़े। अगले दिन ही मेरे पति रामधन को चंडाल चौकड़ी का सरदार शहर ले गया। उसे खूब शराब पिलाई। 2000 रु. की थैली मेज़ पर रखकर बोला—देख यार मैं तेरा भाई हूं। जैसी तेरी बेटी वैसी मेरी बेटी। गरीबों की लड़कियों की तो ऐसी ही शादी होती है। मैं सारा मामला पटा आया हूं। वर की उम्र कुछ ज़्यादा है तो क्या हुआ।

रामधन ने घर आकर बताया कि बेटी का रिश्ता पक्का कर आया हूं। चौथे दिन बरात आने वाली है। मैंने कुछ और पूछना चाहा पर वह तो घर से गायब हो गया। मुझे लगा दाल में कुछ काला है। सारी बात का पता लगाया। बहुत रोना आया। रो-धोकर जब लगा कि उससे क्या होगा तो जिंदगी में पहली बार पति के खिलाफ़ आवाज़ उठाने की ठानी।

पंचायत से अपील

मैंने पंचायत में सारी बात बताई। रामधन के चालचलन से सब जानकारी रखते थे। उन्होंने कहा हम तेरी मदद करेंगे। रोती तड़पती मैं गांव के महिला-मंडल में भी अपनी फरियाद लेकर पहुंची। मेरी कहानी सुनकर उन्होंने फौरन बैठक बुलाई और आश्वासन दिया कि शादी के दिन हम पंचायत के साथ मिलकर पूरा इंतजाम करके रखेंगे। तुम घबराओ मत।

शादी में एक दिन रह गया। रामधन अपनी मंडली के साथ बैठा शराब पीता रहा। महिला मंडल की औरतों ने 15 साल की नाबालिग बच्ची की शादी के खिलाफ़ रपट लिखवा दी। बरात आने वाले दिन पुलिस का इंतजाम भी कर रखा था। जब लोगों ने बरात में आए 70 साल के बूढ़े दूल्हे को देखा तो हैरान रह गए।

रामधन ने कहा कि और लोग बीच में टांग अड़ाने वाले कौन होते हैं। लेकिन पुलिस इंसपेक्टर ने आगे बढ़कर फौरन दूल्हे को पहचान लिया। उसने पहले भी इसी तरह कई नाबालिग लड़कियों से पैसे के बल पर शादी करके उनकी जिंदगी बर्बाद की थी। उस बूढ़े दूल्हे, रामधन और उसकी मंडली को पुलिस हथकड़ियां लगाकर ले गई। महिला मंडल की औरतों ने भी दूल्हे के गले में जूतों का हार पहना दिया ताकि उसे कुछ तो शर्म आए। □

साभार—'युवा साथिन', सूत्र